Printed Pages– 6+2=8

a2zSubjects.com

YR-228

B. A. (First Semester) Examination, Nov.-Dec. 2016

HINDI LITERATURE

a2zSubjects.com

हिन्दी साहित्य

(प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य)

Time Allowed : Three hours

Maximum Marks : 85

नोट : *सभी तीनों खण्डों के प्रश्नों का उत्तर निर्देशानुसार दें।*

खण्ड–अ

a2zSubjects.com

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न) 5×2=10

1. निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 20 शब्दों में दीजिए–

(i) ज्ञानमार्गी धारा के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

(ii) सूरदास की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

(iii) तुलसीदास की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

(iv) 'कठिन काव्य का प्रेत' किस कवि को कहा जाता है?

a2zSubjects.com

(v) रसखान की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए।

खण्ड–ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न) 5×5=25

2. निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 150 शब्दों में दीजिए–

(अ) कबीर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

अथवा

सगुण धारा के प्रमुख कवि कौन हैं? स्पष्ट करते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

(आ) प्रेममार्गी धारा की प्रमुख प्रवृत्तियों को स्पष्ट कीजिए।

a2zSubjects.com

a2zSubjects.com

अथवा

रीतिकाल नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

(इ) तुलसीदास का समस्त काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। स्पष्ट कीजिए।

अथवा

a2zSubjects.com

"सूर का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है।" स्पष्ट कीजिए।

(ई) भावपक्ष और कलापक्ष की दृष्टि से घनानन्द के काव्य की समीक्षा कीजिए।

अथवा

भूषण के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(उ) जायसी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

रसखान की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए।

a2zSubjects.com

a2zSubjects.com

खण्ड-स

5×10=50

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

3. निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 800 शब्दों में दीजिए—

(अ) भक्तिकाल की विशेषताओं पर विस्तार से प्रकाश डालिए।

अथवा

a2zSubjects.com

रीतिकाल की प्रमुख धाराओं का परिचय दीजिए।

(आ) 'गुरुदेव को अंग' का सार लिखिए।

अथवा

सूरदास की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

(इ) 'बिहारी ने गागर में सागर भर दिया है।' इस कथन की सत्यता सिद्ध कीजिए।

अथवा

घनानन्द की भक्ति-भावना की विवेचना कीजिए।

(ई) निम्नलिखित पद्यांशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए—

दुलहनीं गावहुं मंगलचार।

a2zSubjects.com

a2zSubjects.com

हम धरि आये हो राजा राम भरतार॥

तन रति कर मैं मन रति करिहूं पंचतत बराती।

रामदेव मोरे पांहुने आये, मै जोबन मैं माती॥

अथवा

a2zSubjects.com

उधौ मन न भए दस बीस।

एक हुतौ सो गयौ स्याम संग को अराधै ईस॥

इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यौ देही बिनु सीस।

आसा लागि रहिति तन स्वासा, जीविहिं कोटि बरीस॥

तुम तौ सखा स्याम सुन्दर के, सकल जोग के ईस।

सूर हमारे नंद-नंदन बिनु और नहीं जगदीस॥

a2zSubjects.com

अथवा

गाइये गनपति जगबंदन। संकर-सुवन भवानी नन्दन॥

सिद्धि-सदन गज-बदन विनायक। कृपा सिंधु, सुंदर सब लायक॥

मोदक प्रिय मुद-मंगल दाता। विद्या-बारिधि बुद्धि विधाता॥

मांगत तुलसीदास कर जोरे। बसहि रामसिय मानस मोरे॥

(उ) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत लजियात।

भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सब बात॥

a2zSubjects.com

a2zSubjects.com

पाई महावरु दैव कौं, नाइनि बैठी आइ।

फिरि फिरि, जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाइ॥

अथवा

हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।

नीर सनेही को लाय कलंक निरास है कायर त्यागत प्रानै॥

प्रीति की रीति सु क्यौं समुझै जड़ मीत के पानि परे को प्रमानै।

या मन की जु दसा घनआनंद जीव की जीवनि जान ही जानै॥

अथवा

a2zSubjects.com

ब्रह्म के आनन ते निकसे ते अत्यंत पुनीत तिहूँ पुर मानी।

राम युधिष्ठर के बरने बलमीकिहु व्यास के संग सोहानी॥

भूषण यों कलि के कविराजन राजन के गुन पाय नसानी।

पुन्य चरित्र सिवा सरजा सर न्हाय पवित्र भई पुनि बानी॥

a2zSubjects.com